अमिताभ विक्रम द्विवेदी की कविता

प्रेम (एक)

प्रेम हल्का होता है
टॉइलेट-पेपर-सा
हाईजैनिक-मुलायम;
निकलता, पुछता
और बहा दिया जाता है,
भँवर में घुमाने के लिए।
प्रशांत गहराइयों में गोते लगाता, प्रेम,
डूबता-तैरता और
खो जाता है पल-भर में
सदा के लिए।

प्रेम (दो)

प्रेम में इंसान बच्चा बन जाता है-
नन्हा नवजात।
सन रहता है प्रेम में,
न्होख रहे बच्चे जैसा।
जिसे भान होता है-
किसी भी पल धुल जाएगा यह भाव
पर पड़ा रहता है, वह
निरीह, कमजोर सा
अपने प्रेम के सहारे।

प्रेम (तीन)

कुछ-कुछ बदल रहा है।
कुछ बदलना बाकी है।
कुछ,
कभी भी नहीं बदलेगा।
जो ना बदले वह समझ लेना
कुछ और था
प्रेम नहीं था।

प्रेम (चार)

प्रेम अपंग जीव-सा
ढोता पंगु देह
चलता नहीं, रगड़ता है
अपने नितंबी भाव।
जो हैं-
प्यार और चाल दोनों के
संवाहक।

प्रेम (पाँच)

काश! प्रेम भी होता सरकारी नौकर-
बेपरवाह और पर्मानेंट।
कुछ ना करने पर भी
बढ़ती रहती प्यारी तनख्वाह,
मिलते रहते चुम्मन से इंक्रेमेंट,
और खत्म हो जाने पर भी
मिलती यौनिक पेंशन।

संपर्क : अमिताभ विक्रम द्विवेदी, मोबाइल: 9419215764
amitabhvikram@yahoo.co.in